रिपोर्ट

राष्ट्रीय संगोष्ठी “गांधी और हिन्दी साहित्य”

24 अप्रैल, 2024

<u>समन्वय और प्रतिरोध की चेतना के वाहक थे - गांधी</u>

आज दिनांक 24 अप्रैल 2024 को श्याम लाल कॉलेज के मल्टीपरपज हॉल में ‘गांधी और हिंदी साहित्य’ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन हिंदी विभाग, गांधी स्टडी सर्किल, आईक्यूएसी, श्यामलाल कॉलेज तथा गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में विषय का प्रवर्त्तन करते हुए हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ. राजकुमार प्रसाद ने भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाओं में व्यक्त नवजागरण की चेतना के माध्यम से आधुनिक हिंदी साहित्य की बदली हुई चेतना की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने साहित्य और राजनीति के अंतर्संबंध का महत्त्व बताते हुए यह चिंता व्यक्त की कि हिंदी में गांधीवाद से प्रभावित साहित्य तो बहुत रचा गया लेकिन गांधीवादी आलोचना की धारा का विकास नहीं हो पाया।

श्याम लाल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रबी नारायण कर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि गांधी का व्यक्तित्व और योगदान इतना बहुआयामी है कि सभी विषयों में उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ समय से कॉरपोरेट गवर्नेंस के क्षेत्र में गांधीजी के ट्रस्टीशिप जैसे सिद्धांतों से काफी कुछ सीखा गया है। अब कॉमर्स की क्लास में भी गांधी के विचारों को लेकर जाने की ज़रूरत है। बायजू की सफलता और असफलता की कहानी की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रो. कर ने कहा कि अगर उसके गवर्नेंस में गांधीजी के सिद्धांतों का पालन किया गया होता तो उसका ये हश्र नहीं हुआ होता।

उद्घाटन सत्र का बीज वक्तव्य हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार श्री अरविंद मोहन ने दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति जैसी हिंदी के उत्थान से जुड़ी संस्थाओं से गांधी जी के जुड़ाव को रेखांकित करते हुए बताया कि गांधी जी के लिए हिंदी राष्ट्रीय एकता का

साधन थी। गांधी की मानसिक बनावट हिंदी के बिना पूरी नहीं होती। तुलसी, कबीर, मीरा की भक्ति और सामाजिक दृष्टि का प्रभाव उन पर स्पष्ट दिखाई देता है। दूसरी तरफ जो समाज गांधी बनाना चाहते थे, वह जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद और रेणु के साहित्य में दिखाई देता है। गांधी के पसंदीदा भजनों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी में भाषा भेद मिटाने की ताकत है।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रो. ओमजी उपाध्याय ने अपने वक्तव्य में कहा कि अंग्रेज भारत को कम से कम 16 राज्यों का विखंडित समूह मानते थे। उनका दावा था कि भारत कभी एक राष्ट्र रहा ही नहीं। प्रो. उपाध्याय ने कहा कि राष्ट्र कुछ और नहीं, एक होने का नाम है। इस संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि भारत का महानायक वही हो सकता है जो समन्वय की विराट चेतना लेकर आए। बुद्ध और तुलसीदास के बाद ऐसी विराट चेतना गांधीजी की थी। समन्वय के साथ गांधीजी में अन्याय के प्रतिरोध की चेतना को रेखांकित करते हुए प्रो. उपाध्याय ने कहा कि 1893 में डरबन में मात्र 24 वर्ष की उम्र में गांधीजी की प्रतिरोध की यात्रा शुरू हो जाती है। उन्होंने हिंदी के अनेक कवियों और प्रेमचंद के उपन्यासों पर गांधीजी के विचारों के प्रभाव पर भी बात की।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, मनोविज्ञान के प्रोफेसर और प्रसिद्ध चिंतक प्रो. गिरिश्वर मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि गांधी का हर अंश प्रतीक में रूपांतरित हो गया है। गांधी के लिखे को आप साहित्य मानें, न मानें, लेकिन उनका लिखा विस्तृत वांग्मय गहरी रुचि का विषय है। गांधीजी के कथन कि सत्य ईश्वर है, के संबंध में प्रो. मिश्र ने कहा कि यह औपनिषदिक विचार के करीब है। उन्होंने कहा कि गांधीजी को शक्ति सत्य के मार्ग पर चलने से मिली थी। लेकिन सत्य की साधना बहुत कठिन है। इसके लिए उन्होंने निजी जीवन में भी बहुत सारी पीड़ाएं झेलीं। गांधीजी के स्वराज की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि स्वराज का अर्थ है आपका अपने ऊपर राज। आपका अपने ऊपर राज या नियंत्रण नहीं है तो वह स्वराज नहीं है।

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. गोपेश्वर सिंह ने अपने वक्तव्य में गांधीजी के व्यक्तित्व में शब्द और आचरण की एकता होने पर विशेष बल दिया और कहा कि गांधी में आचरण की यह सभ्यता भक्ति साहित्य के प्रभाव से आई। गुजराती भक्त कवि नरसी मेहता के भजन 'वैष्णव

जन तो तेने कहिए' पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि जो दूसरों का दुख समझे, वही वैष्णव है।

गांधीजी के विचारों पर भक्ति साहित्य का प्रभाव बताते हुए प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि गांधीजी एक तरफ रामराज्य का सपना तुलसीदास से लेते हैं, दूसरी तरफ स्वावलंबी बनाने का सपना और उसका प्रतीक चरखा कबीर से लेते हैं।

संगोष्ठी में तीन सत्रों में विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से आए 69 से अधिक प्राध्यापकों, शोधार्थियों और कॉलेज विधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इसके अलावा सैकडों विधार्थियों और प्राध्यपकों की उपस्थिति पूरे सत्र के दौरान बनी रही। कॉलेज विधार्थियों द्वारा प्रस्तुत आलेख में तीन श्रेष्ठ आलेख को पुरुस्कृत किया गया। अंजली सिंह (बी.ए. ऑनर्स) डॉली (बी.ए. ऑनर्स) एवं शिंतु (बी.ए. ऑनर्स) को पुरस्कार स्वरूप क्रमश: 1500 रूपये तक की बहुमूल्य किताबें भेंट की गयी। पुरस्कार वितरण का यह कार्य गांधी भवन, दि.वि. के निदेशक के.पी. सिंह द्वारा प्रदान किया गया। संगोष्ठी के समापन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन के निदेशक प्रो. के. पी. सिंह ने वर्तमान में समाज में आ रहे बदलावों की चर्चा करते हुए गांधीजी की राह पर चलने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पहले टेलीफोन के तार हमें एक दूसरे से जोड़े रखते थे लेकिन आज बिना तार के मोबाइल फोन ने हमें आपस में ही दूर कर दिया है और एक आभासी दुनिया पैदा कर दी है। हमें फिर आपस में जोड़ने और जुड़ने की आवश्यकता है तभी गांधी के सपनों के भारत को साकार कर सकेंगे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ ही गांधी से संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी दिल्ली के प्रमुख प्रकाशक राजकमल प्रकाशन एवं सस्ता साहित्य मंडल की ओर से किया गया। अंत में कॉलेज प्राचार्य प्रो. रबी नारायण कर ने सभी का आभार प्रकट किया।

डॉ. राजकुमार प्रसाद
समन्वयक एवं प्रभारी, हिन्दी विभाग

डॉ. सीताराम कुंभर
समन्वयक गांधी स्टडी सर्किल एवं प्रभारी राजनीति विज्ञान